Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य में स्त्री, समाज और राष्ट्र

डॉ0 रुचि पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत, आगरा कॉलेज, आगरा, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3 Issue 4
Page Number : 76-78
Publication Issue :
July-August-2020
Article History
Accepted : 10 July 2020
Published : 20 July 2020

सारांश–मानव से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता है। इसलिए विश्व कल्याण के लिए ''मानव'' को अकेले ही चलना होगा। उनका यह गीत ''एकला चलोरे'' सम्बन्धतः इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करता है।

मुख्य शब्द–रवीन्द्रनाथ,टैगोर, साहित्य, स्त्री, समाज, राष्ट्र।

उपेयुषामपि दिवं सन्निबन्धविधायिनाम् ।
आस्त एव निरातर्किान्त काव्यमयं वपुः ।।

भामह कृत काव्यालंकार ।। 6।। अर्थात् सत्काव्य का निबन्धन करने वालों के (इस संसार से) दिवंगत हो जाने पर भी उनका सुन्दर काव्यमय शरीर तो आतंकों से रहित (इस संसार) में रहता ही है।

उक्त लक्षण गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और उनके साहित्य पर पूर्णरूपेण लक्षित होता है। वे आज भी अपने विश्वविख्यात साहित्य द्वारा कीर्तिस्वरूप हमारे मध्य प्रत्यक्ष है।

व्यक्तित्व; महात्मा गाँधी द्वारा प्रदत्त 'गुरुदेव' की उपाधि से समादृत उन्होंने, साहित्य की विभिन्न विधाओं चित्र, संगीत, काव्य–कथा निबन्ध, उपन्यास आदि के माध्यम से विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की। किसी साहित्य के सृजन में, स्थान, वातावरण और परिवेश तथा कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिसका प्रभाव टैगोर की कृतियों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। गुरुदेव ने जिस परिवार में जन्म लिया, वह अपनी कलाप्रियता, विद्या–व्यवसन व संगीत प्रेम के लिए विख्यात था। यही कारण है कि टैगोर के साहित्य में नारी, परिवार, समाज और राष्ट्र का साकार स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

टैगोर विश्वकवि थे। एक महाकवि होने के कारण उन्होंने भावों और संवेगों के दमन का परामर्श न देकर, मानवीय शक्तियों में सामंजस्य रखते हुए समाज व राष्ट्र के विकास का समर्थन किया है। प्रेम सर्वोपरि है। सृष्टि में सामंजस्य है, अतः व्यक्तित्व में भी सामंजस्य होना चाहिए। वे समाज व राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए इसी आधार को स्थापित करते हैं। कहानियों में नारी पात्र–स्त्री पात्रों के वर्णन में रचनाकार ने नारी के अस्तित्व, स्वाभिमान को कहीं आहत नहीं किया है। उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों (माँ, बहिन, प्रेमिका, पत्नी, सेविका) को अपनी तूलिका से उकेरा है। नारी–स्वभाव, नारी–संवेदना, नारी–सौदर्य कुछ भी गुरुदेव की लेखनी से अछूता नही रहा है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

'अन्तिम प्यार'' कहानी में माँ की संवेदना की अभिव्यक्ति हो या पिंजर कहानी में स्थूल रूप से भावनाओं को अभिव्यक्त न कर पाने की पीड़ा लिए सूक्ष्म रूप (पिंजर) में व्यक्त करने वाली यह अनाम नायिका, 'गूँगी' कहानी की वाणी विहीन सुभाषिणी हो या ''खोया हुआ मोती'' की ''मनिमलिका'', भिखारिन हो, ''पाषाणी'' कहानी की ''मृगमयी'' प्रकृतिप्रदत्त नारी की सरलता, सहजता, प्रेम से अनभिज्ञता को अभिव्यक्ति कर हृदय में स्थान बना ही लेती है।

नारी की ऐसी मनोदशा का चित्रण, हृदय की गहराइयों में उतरकर मर्म को छू जाता है। भले ही आत्मा का वर्चस्व हो या न हो, हृदयगत भाव किसी न किसी रूप में साकार हो ही उठते हैं। गुरुदेव के साहित्य (कहानी आदि) में महाकवि कालिदास का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। कालिदास के सहश गुरुदेव का प्रकृति प्रेम, मानवीय संवेदनाओं से अछूता नही है। उनके उपमान, उसी स्थान व परिवेश से ग्रहण किये गये हैं, मात्र कल्पनाओं के सृजन या उड़ानों से नहीं। प्रकृति और नारी, एक दूसरे की पूरक है। प्रकृति की कोमलता, सरसता, नारी की हृदयगत रसता ही तो है।

समाज; समाज से राष्ट्र बनता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के लिए प्रयासरत थे। अन्धविश्वास की बेड़ियों से विकास सम्भव नहीं है। अतः वे इस जकड़नों से भरे समाज को मुक्त करना चाहते थे। जिस समय गुरुदेव ने भारतीय वसुन्धरा पर नेत्रोन्मीलन किया, उस समय भारत परतन्त्रता के पूर्ण काल में गमन कर रहा था। इन्हीं कारणों से जो उनके बालमन पर अंकित हुआ, उस अपनी रचनाओं में उकेर दिया। उदाहरणार्थ–जून–जुलाई 1901 में प्रणीत ''नैवेद्य'' नामक शीर्षक गीत : –

ए दुर्भाग्य देश हते, हे मंगलमय
दूर करे दाओ, तुमि, सर्व तुच्छभय

राष्ट्र; रवीन्द्र नाथ टैगोर के साहित्य में ''राष्ट्रवाद'' महत्वपूर्ण बिन्दु से उठकर ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के रूप में स्थापित हुआ। उन्होंने अपने साहित्य में राष्ट्रीय विकास व सुधार के लिए गाँवों को प्रमुखता दी। उनकी दृष्टि में राष्ट्र सेवा का प्रमुख कार्य ग्रांम सेवा है।

निराला जी की ये पंक्तियाँ–''हे ग्राम देवता ! नमस्कार ! सोने–चाँदी से नहीं किन्तु तुमने मिट्टी से किया प्यार में निहित भाव गुरुदेव के ग्रामप्रेम को ही अभिव्यक्ति करते हैं।

वे जानते थे कि ईश्वर वहाँ मिलेगा जहाँ किसान हल जोत रहा हो। गाँवों और शहरों की दूरियाँ को मिटाना सर्वोपरि है। यही कारण है कि उनकी कहानियों, कथाओं व उपन्यासों के नायक ग्रामीण अंचल में रहते हुए, कई बार कलकत्ता, पूना, नागपुर आदि शहरों में जीविकोपार्जन के लिए गये हैं लेकिन पुनः गाँवों की ओर लौटे हैं। राष्ट्र के विकास का स्वप्न आँखों में संजोए वे प्राच्य रहन–सहन व चिन्तन को पाश्चात्य विज्ञान से जोड़ कर देखते थे। व्यक्ति का सम्मान और उसकी स्वतंत्रता परमावश्यक है। धर्म, भाषा, जाति, लिंग के आधार पर भेदभाव करने से राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। यही कारण है कि त्याग–नामक कहानी में पिता के कठोर आदेश के पश्चात् नायक हेमन्त अपनी पत्नी कुसुम को त्याग नहीं पाता और इसके लिए आवश्यक है कि मानव कल्याण को महत्त्व दिया जाये। वे पूर्णतः मानवतावादी थे। उन्हीं का कथन ''इसके साथ ही मानव कल्याण के प्रति भी मुझे लालसा रही तथा स्वाभाविक रूप से मैं अपने ढंग से अभिव्यक्ति देता रहा हूँ।''

उनकी देशभक्ति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बाधक नहीं है। ''जन–गण–मन'' तथा ''आमार सोरान बांगला'' गीत उनके राष्ट्र प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं।

मानव से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता है। इसलिए विश्व कल्याण के लिए ''मानव'' को अकेले ही चलना होगा। उनका यह गीत ''एकला चलोरे'' सम्बन्धतः इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करता है–

जब वे तुम्हारी पुकार न सुनें,
एकला चलो रे।।
जब कोई तुमसे कुछ ना कहे, अरे अभागे,
जब सब तुमसे मुँह फेर ले व भयभीत हो,
तब अपने अन्दर झाँको।
अरे अपने मुँह से अपनी बात एकला बोलो रे,
जब सुब दूर चले जाएँ, अरे अभागे
जब कंटीले पथ पर कोई तुम्हारा साथ न दे।
तब अपने पथ पर
काँटों को अकेले ही पद–दलित करो रे
जब कोई प्रकाश न करें, अरे अभागे,
जब रात काली और तूफानी हो
तब अपने हृदय की पीड़ा के आगोश में
अकेले जलो रे
एकला चलो ! एकला चलो ! एकला चलो रे !

अनुक्रमणिका

1. काव्यालंकार–भामह।
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियाँ।
3. गीतांजलि–रवीन्द्रनाथ टैगोर